स्वप्नवासवदत्तम्

(षष्ठोऽङ्कः)

श्रुतिसुखनिनदे! कथं नु देव्या

स्तनयुगले जघनस्थले च सुप्ता ।

विहगगणरजोविकीर्णदण्डा

प्रतिभयमध्युषितास्यरण्यवासम् ॥१॥

अन्वय- श्रुतिसुखनिनदे! देव्याः स्तनयुगले च जघनस्थले सुप्ता, विहगगणरजः विकीर्णदण्डा(त्वम्) प्रतिभयम् अरण्यवासम् तु कथम् अध्युषिता असि?

अनुवाद- कानों को सुख प्रदान करने वाली मधुर ध्वनि से युक्त! देवी (वासवदत्ता) के स्तनयुगल और जघनस्थल पर सोयी हुई, पक्षीसमूह द्वारा बिखेरे गये मलयुक्त दण्ड वाली (तुम) भयंकर वनवास करते हुये भला कैसे रहीं ?

श्रोणीसमुद्वहनपार्श्वनिपीडितानि,

खेदस्तनान्तरसुखान्युपगूहितानि ।

उद्दिश्य मां च विरहे परिदेवितानि,

वाद्यान्तरेषु कथितानि च सस्मितानि ॥२॥

अन्वय- श्रोणी-समुद्वहन-पार्श्वनिपीडितानि, खेदस्तनान्तरसुखानि उपगूहितानि च विरहे माम् उद्दिश्य परिदेवितानि च वाद्यान्तरेषु सस्मितानि कथितानि(न स्मरसि) ॥२॥

अनुवाद- (वीणा बजाते समय) जंघाओं पर धारण करती हुयी, दोनों पार्श्वभागों के अत्यधिक दबाने को, थकान होने पर दोनों स्तनों के बीच सुख प्रदान करने वाले आलिङ्गनों को एवं विरह में मुझे लक्ष्य करके किए गए विलापों को तथा वीणावादन के बीच में मुस्कुराहट युक्त कहे गये वचनों को(तुम स्मरण नहीं करती हो) ।